WORLD SPIRITUALITY SUMMIT
SHANTI MANTHAN
16–17 DECEMBER 2026, BHARAT MANDAPAM, NEW DELHI
REGISTER NOW →

नदी की सफाई में क्या छूट जाता है?

Contributed By: आचार्य प्रशांत | नवभारत टाइम्स • 22 Nov 2026, 9:05 am IST

Subscribe YouTube 12M

नदियों के प्रदूषण को लेकर आचार्य प्रशांत कहते हैं कि हम यमुना को माँ कहते हैं। घाट पर खड़ा आदमी जब उसे माँ कहता है, तो मुझे उसकी नीयत पर शक करने की कोई वजह नहीं दिखती। लेकिन सिर झुकाने में कुछ मिनट लगते हैं। दिन के बाकी घंटों में मैं जो करता हूँ, वह भी पाइप के रास्ते उस तक पहुँचता है।



आचार्य प्रशांत(फोटो- नवभारतटाइम्स.कॉम)

बाल दिवस पर मैं बच्चों के साथ बैठा था। पूरा हॉल भरा हुआ था। बच्चों के हाथों में गुब्बारे थे और उनके पास पूछने को बहुत कुछ था। एक बच्चे ने पूछा, 'बुरे लोगों ने जंगल क्यों काटा था? मैंने कहा, क्योंकि वो सब कुछ काटते हैं। जंगल ही नहीं काटते। मान लो कल दुनिया में जंगल ही न बचें। तुम्हें क्या लगता है, काटना रुक जाएगा? फिर मैंने उन्हें डोडो के बारे में बताया। बड़ी-सी चिड़िया थी, बड़ी सीधी। बुलाओ तो कई बार पास आ जाती थी। पीछा करो तो बहुत तेज़ भाग भी नहीं पाती थी। तो हमने उसे मार-मारकर खत्म कर दिया। पूरी दुनिया में एक भी डोडो नहीं बचा। और डोडो खत्म हो गई तो क्या हमने मारना छोड़ दिया? हम किसी और को मारने लगे।

मुर्गे की बात भी हुई। आपको लगता है कि एक मुर्गा मारा और बात वहीं खत्म हो गई। बात वहीं कैसे खत्म होगी? आपके भीतर जो मारने वाला बैठा है, उसे आपने थोड़ी और ताकत दे दी। अब वह मुर्गे पर क्यों रुकेगा? वह चिड़िया को मारेगा, पेड़ काटेगा, अपने घर के लोगों को भी नहीं बख्शेगा। नदी को भी मारेगा, पहाड़ को भी। तो

Advertisement

आज का तापमान नई दिल्ली
तापमान वायु गुणवत्ता
23.9°C
21.8 जैसा लगता है
Min 15.4 Max 25.4
Smoky haze
Powered By AQI

वीडियो

मां शारदा के दर्शन करने पहुंचे राजा भैया

Tarique Rahman on India: बांग्लादेश को गुलाम बनाने की हिम्मत.., भारत पर फिर क्यों...

America Blackout: बैंक-विमान ठप, राशन जमा करने में जुटे लोग, अमेरिका में अचानक...

मैंने बच्चों से कहा, इस सवाल पर मत रुक जाना कि वे लोग पेड़ों के साथ इतनी क्रूरता क्यों करते हैं। पूछना यह है कि हम हिंसक क्यों हैं? बाद में एक बात मेरे साथ रह गई। बच्चे ने कहा था, 'बुरे लोग'। मेरा जवाब पूरा होते-होते मैं कह रहा था, 'हम'। बच्चे को तो जाने दीजिए। उसे लगता है काटने वाले कहीं बाहर हैं। हम बड़े भी यही करते हैं, बस थोड़ी ज़्यादा होशियारी से।

YOU MAY LIKE

SPONSORED LINKS BY TABOOLA



Indians over 65 are switching from hearing aids to this new device.

Hearing Loss

Learn More

आपके पसंद की स्टोरी

'अगर कोई दूसरा मुल्क हमें लेने को तैयार हो तो बताइए', मुलायम सिंह...

अनंत सिंह की बेटी के तिलक में पंडित जी को कितनी मिली दक्षिणा? ...

सीएम योगी की मां का घर देखा क्या? दीवार पर पुताई, छत में पॉलीथिन देख लो...

720 रन बनाकर भी टूटा टीम इंडिया का सपना, 17 साल का सूखा बरकरार,...

अगली शाम कालिंदी कुंज में, ओखला बैराज के पास, लोग यमुना में खड़े होकर डूबते सूरज को अर्घ्य दे रहे थे। चारों ओर गाढ़ा सफेद झाग था। दिल्ली जल बोर्ड की नावें इधर-उधर जा रही थीं और झाग हटाने के लिए रसायन छिड़क रही थीं। पिछली कुछ सर्दियों में भी यही हुआ है। इसी महीने की शुरुआत में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि सफ़ाई पर इतनी बड़ी रकम खर्च होने के बावजूद यमुना में प्रदूषण बढ़ा है।

हम यमुना को माँ कहते हैं। घाट पर खड़ा आदमी जब उसे माँ कहता है, तो मुझे उसकी नीयत पर शक करने की कोई वजह नहीं दिखती। लेकिन सिर झुकाने में कुछ मिनट लगते हैं। दिन के बाकी घंटों में मैं जो करता हूँ, वह भी पाइप के रास्ते उस तक पहुँचता है। नदी में खड़ा हूँ तो वह मेरी माँ है। कुछ किलोमीटर दूर अपने बाथरूम में खड़ा हूँ तो मुझे क्या लगता है, पानी कहाँ जा रहा है? किसी को माँ भी कहूँ और उसे ज़हर भी देता रहूँ? यह कैसा प्रेम है?



Pakistan Drone Deal: तुर्की से 1 लाख किलर ड्रोन खरीदेगा पाकिस्तान, क्या है खतरनाक...

रेकमेंडेड खबरें ›



भारत क्यों चाहता है UNSC में स्थायी सदस्यता? फायदा, कैसे बढ़ेंगी सीटें, जेएनयू प्रोफेसर ने...



Nepal PM Balen Shah India Visit Live Updates: नेपाल के PM बालेन शाह आज...



आज का मौसम 22 नवंबर: 12 राज्यों में मूसलाधार बारिश का अलर्ट, 60 की स्पीड से चलेगी...



6375 किलोमीटर दूर से दिल्ली पहुंच रहे यूरोप के इस छोटे से देश के विदेश मंत्री, पीएम मोदी ने ...



नेपाल का पीएम बनने के बाद आज पहली बार भारत दौरे पर आ

Advertisement

जहां मेरी शिकायत खत्म होती है

मान लीजिए मेरे घर के बाहर नाली रुक गई और गंदा पानी मेरे सोने के कमरे में घुस आया। मैं क्या करूँगा? घंटे भर के भीतर नगर निगम को फ़ोन करूँगा। कोई नहीं आया तो बार-बार फ़ोन करूँगा। फिर कोई कर्मचारी आता है, नाली खोल देता है, पानी बह जाता है और मैं चैन की साँस लेता हूँ। अब वह पानी गया कहाँ? वहीं, जहाँ हमेशा जाता है, यमुना में। क्या कल सुबह मैं उतनी ही बेचैनी से इसके लिए भी फ़ोन करूँगा? नहीं करूँगा। अधिकारी लिख देता है, 'शिकायत का निपटारा हुआ।' क्या उसने मेरी शिकायत गलत समझी? उसने तो ठीक-ठीक समझी। मैंने कब कहा था कि इस गंदे पानी को साफ़ करो? मैंने कहा था, मेरे घर से निकालो। उसने निकाल दिया। आगे कहाँ गया, यह मैंने ही नहीं पूछा।

Advertisement

एक और उदाहरण लीजिए। मैं एक गिलास पानी पीने जा रहा हूँ। क्या उसमें किसी को थूकने दूँगा? बिल्कुल नहीं। लेकिन रोज़ नाली में मैं क्या बहाता हूँ, देखिए। थूक से कहीं ज़्यादा गंदा पानी उस नदी में भेजता हूँ, जिससे आगे कोई अपना गिलास भरेगा। तो पानी की चिंता मुझे कब होती है? जब वह मेरे होंठों तक आने वाला हो। जब वह मेरा हो जाए।

वेदांत इसी को अहंकार कहता है। अहंकार का मतलब यहाँ सिर्फ़ घमंड समझकर मत रह जाइए। यह जो 'मैं' है, इसके चारों ओर एक लकीर खिंची है। उस लकीर का नाम है 'मेरा'। शरीर की एक सीमा है, और शरीर के लिए वह ज़रूरी भी है। लेकिन यह किसने तय किया कि जहाँ मेरी चमड़ी खत्म होती है, वहीं मेरी चिंता भी खत्म हो जाए? यह अहंकार का काम है। लकीर के भीतर मैं बड़ी सफ़ाई रख सकता हूँ। बाहर जो है, वह किसी और की समस्या है। अभी पानी गिलास में था तो मैंने कहा, प्रकृति है। एक घूँट लिया और अब कहता हूँ, यह मैं हूँ। और मछली? मेरे गिलास लेकर आने से बहुत पहले से वह पानी उसका घर था। अब उसे पहले यह साबित करना होगा कि उसके मरने से मेरी सेहत पर असर पड़ेगा। तब कहीं उसकी सुनवाई होगी। तो यह प्रकृति से प्रेम है या अपने आप से प्रेम करने का ही एक और ढंग?

Advertisement

अब यमुना को देखिए। हम उसके प्रदूषण की चर्चा ऐसे करते हैं जैसे नदी ने अपने साथ कुछ कर लिया हो। नदियाँ खुद को गंदा नहीं करतीं। पल्ला में, जहाँ यमुना दिल्ली में प्रवेश करती है, इस सितंबर में दिल्ली की अपनी जाँच में जैविक प्रदूषण का मुख्य सूचक तय सीमा के भीतर था। आईएसबीटी पुल पर वही सूचक सीमा से दस गुना था। मानव मल से आने वाले बैक्टीरिया की मात्रा नहाने के लिए तय सीमा से चौदह गुना थी। नदी हमारे पास एक हालत में आई थी। थोड़ी दूर आगे उसकी हालत कुछ और थी। इन दोनों जगहों के बीच उसमें क्या मिला? हमारे नाले। वज़ीराबाद से ओखला तक का हिस्सा सिर्फ़ 22 किलोमीटर है। नदी की पूरी लंबाई का दो प्रतिशत भी नहीं। फिर भी उसके कुल प्रदूषण का लगभग तीन-चौथाई इसी हिस्से से आता है। सूखे महीनों में वज़ीराबाद से आगे नदी का अपना पानी बहुत कम बहता है। माने दिल्ली में जिसे हम यमुना कहते हैं, उसमें ज़्यादातर वही पानी है जिसे दिल्ली इस्तेमाल करके छोड़ चुकी है।

Advertisement

सुप्रीम कोर्ट के सामने रखी गई योजना में ऐसे 520 नाले गिने गए हैं जो यमुना और उसकी सहायक नदियों में गिरते हैं। उनसे हर दिन लगभग 970 करोड़ लीटर गंदा पानी आता है। सबसे ज़्यादा कहाँ से आता है? घरों से। कारखानों से भी आता है, पर सबसे बड़ा स्रोत घरेलू सीवेज है। घरेलू माने घर। तो जो पूछताछ 'बुरे लोगों' से शुरू हुई थी, वह अब मेरे बाथरूम और मेरी रसोई तक आ पहुँची है।

डेयरी इंडस्ट्री भी इसमें पूरी तरह सहापराधी है। नगर निगम के अपने अनुमान के मुताबिक दिल्ली की डेयरियों से रोज़ लगभग 1,500 टन गोबर निकलता है। उसमें से करीब 200 टन का ही निपटान होता है। बाकी का बड़ा हिस्सा नालों से होते हुए नदी में जाता है। दूध मैं लेता हूँ। गोबर नदी के हिस्से आता है। बिल बताता है कि मैंने कितने पैसे दिए। गाय और नदी ने क्या कीमत चुकाई, वह उसमें कहाँ लिखा है? और देखिए, गाय को भी हम माँ कहते हैं। दूध चाहिए हमें। उसे कैसे रखा जाता है, दूध देना बंद करने पर उसका क्या होता है, इसमें हमारी ज़्यादा दिलचस्पी नहीं है। तो हम पूज किसे रहे हैं?

Advertisement

तस्वीर वाला कुर्ता

कारखाने के मालिक की ज़िम्मेदारी अपनी जगह है। किसी नाले के साथ-साथ चलेंगे तो हो सकता है आप कपड़े की रंगाई करने वाले किसी कारखाने तक पहुँच जाएँ। मालिक का काम है कि वहाँ से निकलने वाले गंदे पानी को साफ़ करे। उससे इसका जवाब माँगा जाना चाहिए। मैं कह रहा हूँ, ज़रा कपड़े के साथ भी चलिए, जो दूसरे फाटक से निकल रहा है। कहाँ जा रहा है? मेरे पास आ रहा है। परिवार में शादी है और मुझे नया कुर्ता चाहिए। पुराने में क्या खराबी है? कुछ नहीं। अब भी ठीक आता है। लेकिन पिछली शादी में पहन लिया था, सारी तस्वीरों में वही है। तो मैं भरी हुई अलमारी के सामने खड़ा होकर कहता हूँ, मेरे पास पहनने को कुछ नहीं है।

Advertisement

बताइए, कपड़े का दुकानदार इसमें क्या कर सकता है? वह मुझे तन ढकने को कपड़ा दे सकता है। तन तो पहले से ढका हुआ था। शरीर की ज़रूरत की एक हद है। इतना खाना, इतना कपड़ा, सिर पर छत, बात पूरी। नए कुर्ते से मैं चाहता हूँ कि मेरा रिश्तेदार मुझे ज़रा बेहतर समझे। इस चाहत की क्या हद है? दुकानदार मुझे हर शादी के लिए नया कुर्ता बेच सकता है। फिर भी बात बनेगी नहीं। कुर्ता कारखाने से आता है। कुर्ते की माँग कहाँ से आती है? मुझसे। पहले मुझे लगा कि मैं छोटा हूँ। वही भाव मुझे दुकान तक ले गया। अब बताइए, जिसे अपने छोटे होने का एहसास सता रहा हो, उसे ढकने के लिए कितना कपड़ा चाहिए? और जब चाहत की कोई हद नहीं, तो वह नदी से कितना लेगी, इसकी हद कौन तय करेगा?

Advertisement

मैंने कुर्ता खरीदा। कारखाने का मालिक रात में गंदे पानी का पाइप खोल देता है। पाइप खोलना उसका फ़ैसला है। मेरा सवाल यह है कि उसका हिसाब देखने को मैं जितना उत्सुक हूँ, अपनी अलमारी देखने को उतना क्यों नहीं हूँ? और जिन रिश्तेदारों की राय तय करती है कि मैं क्या पहनूँ, उनकी राय इस पर भी होगी कि मेरे यहाँ बच्चा कब

होना चाहिए। क्या यह भी उन्हीं से तय कराऊँगा? किसी बच्चे को दुनिया में लाना शादी में जाने से कहीं ज़्यादा गंभीर बात है। मुझे पूछना होगा कि उस बच्चे के लिए मैं कैसी दुनिया तैयार कर रहा हूँ, और मेरे अपने चुनाव उस दुनिया का क्या कर रहे हैं। यह सवाल मुझे अपने आप से पूछना है। किसी गरीब के घर जाकर उसके बच्चे गिनने से इसका जवाब नहीं मिलेगा।

Advertisement

गरम तवे पर बर्फ

ओखला का झाग प्रदूषण है, यह तो साफ़ है। उसमें एक सूचना भी है। नदी ठीक-ठीक बता रही है कि उसके किनारे रहने वाले लोग क्या कर रहे हैं। और जिसे हम समाधान कहते हैं, उसमें बहुत कुछ ऐसा है जिससे नदी की कही बात पढ़ना और मुश्किल हो जाता है।

सोचिए, जलते चूल्हे पर एक तवा रखा है। मैंने उस पर बर्फ़ का टुकड़ा रख दिया। तापमान गिर गया। मैं नापकर आपको दिखा भी सकता हूं कि बर्फ से फायदा हुआ। थोड़ी देर में तवा फिर गरम है, तो मैं और बर्फ़ ले आता हूँ। अब बर्फ़ के लिए बजट है और हर साल एक रिपोर्ट आती है कि कितनी बर्फ़ लाई गई। बर्फ़ में कोई बुराई नहीं है। तवा जल रहा हो तो ठंडा करिए। गड़बड़ तब शुरू होती है जब बर्फ़ के रहते किसी का हाथ चूल्हा बंद करने के लिए उठता ही नहीं।

Advertisement

अब देखिए हमारी बर्फ़ क्या है। घरों और कारखानों से निकले गंदे पानी में डिटर्जेंट होता है। पानी जब बैराज से नीचे गिरता है, तो उसकी वजह से झाग बना रहता है। पिछली सर्दियों में करीब नौ हफ़्ते के एक अभियान में जल बोर्ड ने झाग हटाने वाले 48,000 किलो रसायन पर लगभग 80 लाख रुपये खर्च किए। नदी पर नज़र रखने वाले लोग कहते हैं कि छिड़काव रुकने के घंटे भर के भीतर झाग लौटने लगता है। रसायन का मछलियों पर क्या असर पड़ता है, इस पर भी सवाल हैं। नाव में बैठे आदमी को दोष मत दीजिए। उसे बुलबुले तोड़ने भेजा गया है, वह बुलबुले तोड़ रहा है। पूछिए, नदी में उससे ऊपर बैठा आदमी क्या कर रहा है। और यह भी पूछिए कि हमें क्या चाहिए, साफ़ नदी या ऐसी नदी जो कुछ घंटों के लिए साफ दिखे?

Advertisement

सीवेज शोधन संयंत्रों की बात दूसरी है। उनकी ज़रूरत है। जिस परिवार की गली में सीवर लाइन नहीं है, उसे सीवर लाइन मिलनी चाहिए। और जो पानी सीवर में जाता है, वह ऐसे संयंत्र तक पहुँचे जो वाकई काम करता हो। संयंत्र का काम देखना है तो देखिए कि उससे निकलने वाला पानी कैसा है। उद्घाटन के दिन उसकी क्षमता कितनी बताई गई थी, इससे क्या पता चलेगा? अदालत के सामने रखी योजना के मुताबिक दिल्ली के 37 में से 28 संयंत्र तय मानकों पर खरे उतरते हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने सभी 37 की जाँच की। उसके मुताबिक सारे मानकों पर खरा उतरने वाला एक भी संयंत्र नहीं था। यमुना के पूरे जलग्रहण क्षेत्र के लिए अब 125 नए संयंत्रों का प्रस्ताव है। बनाइए। लेकिन अदालत ने भी कहा है कि प्रदूषण को स्रोत पर रोकना होगा। और स्रोत वहाँ है जहाँ से पाइप शुरू होता है। जहाँ पाइप खुलता है, वहाँ तक हम पहले ही देर कर चुके हैं।

Advertisement

नदी को उसका अपना पानी भी चाहिए। ताजा पानी ज्यादा हो, गंदगी कम हो। इसके लिए कोई चमत्कार नहीं चाहिए। इतना चाहिए कि नदी के बचे रहने से ज़्यादा ज़रूरी हमें अपनी सुविधा न लगे। और ठीक यहीं आकर हम रुक जाते हैं।

बाल दिवस पर बच्चों के साथ हमने एक छोटी-सी कहानी बनाई थी। पहले पेड़ ही पेड़ थे। फिर हम आए। पेड़ काटे और शहर बना दिया। फिर हमने कहा, शहर में बड़ी गर्मी है, सब लोग एक-एक पेड़ लगा दो। एक बच्चे ने कहानी पूरी कर दी, “लगते नहीं हैं।” देखिए, बच्चे को बात कितनी साफ दिखी। जब ज़मीन चाहिए थी, हमें ठीक पता था क्या चाहिए और काम हमने खुद किया। पेड़ लगाने की बारी आई तो काम ‘सब लोगों’ के हवाले हो गया।

Advertisement

क्या नदी फिर से जी सकती है? हाँ। 1957 में लंदन की टेम्स नदी के कुछ हिस्सों को जैविक रूप से मृत घोषित

कर दिया गया था। दशकों तक पैसा लगा, काम हुआ, मछलियाँ लौटीं। आज वहाँ मछलियों की सौ से ज़्यादा प्रजातियाँ दर्ज हैं, हालाँकि सीवेज के उफनकर नदी में जाने की समस्या अब भी है। एक शहर अपनी नदी को बस नदी कहता है और उसे फिर से जीवित कर सका। तो यमुना को माँ कहलाने से क्या मिला? दिल्ली में रिपोर्टों और आँकड़ों की कमी है क्या? हमें मालूम है। हम मानना नहीं चाहते। इंजीनियर रंगाई के कारखाने के मालिक को ठीक-ठीक बता सकता है कि गंदे पानी को साफ़ करने में कितना खर्च आएगा। मालिक को हिसाब पूरा समझ में आता है। अब वह पैसे देगा या रात होने का इंतज़ार करके पाइप खोल देगा, यह इंजीनियरिंग का सवाल है क्या?

Advertisement

यहीं कीमत चुकाने की बात आती है। कारखाने के मालिक को शायद कम मुनाफ़ा स्वीकार करना पड़े। मुझे शायद वही कुर्ता पहनकर शादी में जाना पड़े। और अगर जिस दल को मैं वोट देता हूँ, वह सीवेज की निकासी का इंतज़ाम नहीं कर रहा, तो शायद मुझे उन्हीं लोगों से सवाल करना पड़े जिनका बचाव करना मुझे ज़्यादा अच्छा लगता है। मेरे पास जवाब पहले से तैयार रहते हैं। व्यवस्था ही ऐसी है। सब करते हैं। एक आदमी से क्या होगा? पहले सरकार कुछ करे। इनमें से कुछ बातें सच भी हैं। पर मैं इनका इस्तेमाल स्थिति को समझने के लिए कर रहा हूँ या अपनी आनाकानी को सही ठहराने के लिए? सब समझकर भी आदमी कुछ करने से इनकार कर सकता है। देख लेना काफ़ी नहीं है। सवाल है, जो सही है उससे मुझे इतना प्रेम है कि उसकी कीमत चुका सकूँ? अभी तक तो मुझे किसी और से कीमत चुकवाने में बड़ी आसानी रही है।

Advertisement

सबकी ज़िम्मेदारी बराबर नहीं है। सीवर बिछाना, कारखानों से निकलने वाले गंदे पानी पर नज़र रखना और मानकों का पालन करवाना सरकार का काम है। वह चूके तो उससे जवाब माँगा जाना चाहिए। अपने इरादों की जाँच करके मैं सीवर नहीं बिछा सकता। और जब सत्ता में मेरे अपने लोग बैठे हों, तब मैं उनकी किस चूक पर आँख मूँद लूँगा, इसका फ़ैसला नगर निगम मेरे लिए नहीं कर सकता। विपक्ष में बैठा दल झाग की ओर उँगली उठाता है। सत्ता में आते ही पिछली सरकार की ओर उँगली उठाने लगता है। दलों की जगह बदल जाती है, झाग वहीं रहता है। नेता उसी बात पर बोलता है जिससे वोट मिलेंगे। यह उसे किसने सिखाया? हमने।

Advertisement

एक करोड़ के बदले पांच साल

हवा की भी यही कहानी है। इस महीने की 17 तारीख को दिल्ली की हवा महीने में सबसे साफ़ थी। वायु गुणवत्ता सूचकांक, यानी AQI, 204 था। महीने की सबसे साफ़ हवा, और तब भी 'खराब' श्रेणी में। दो दिन बाद फिर हालत बिगड़ गई। जिस दिन की हवा पहले हमें डरा देती, उसे अब हम अच्छा दिन कहते हैं। लेकिन पूछिए तो, यह धुआँ आया कहाँ से? दिल्ली में कोई ज्वालामुखी तो फटा नहीं। कुछ हमारे भीतर जल रहा है। धुआँ वहीं से उठ रहा है।

Advertisement

हममें से जिनके पास पैसे हैं, वे एयर प्यूरीफ़ायर खरीदकर दरवाज़ा बंद कर लेते हैं। देखिए मैंने क्या किया। वही जो नाली के साथ किया था। समस्या को अपनी लकीर के बाहर कर दिया। प्रदूषण जहाँ था, वहीं है। जिसके पास प्यूरीफ़ायर नहीं है, उसे खिड़की से जो हवा आएगी, वही लेनी है। और जिस पिता को पता चला है कि उसके एकमात्र नल का पानी दूषित है, उसे उसी नल से पानी भरकर घर ले जाना है। उसकी चुप्पी को अज्ञान मत समझिए। उसे अपना रवैया बदलने की सलाह भी मत दीजिए। हो सकता है वह खतरे को मुझसे बेहतर समझता हो। आप बताइए, आज रात अपने बच्चों को वह क्या पिलाए?

Advertisement

एक चर्चित आकलन के मुताबिक अगर दिल्ली की हवा में महीन कणों का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन की सुझाई सीमा तक आ जाए और वहीं बना रहे, तो एक औसत दिल्लीवासी की उम्र 8.2 साल बढ़ जाएगी। आठ साल बहुत होते हैं। फिर हमें ये इतने ज़्यादा क्यों नहीं लगते? क्योंकि किसी एक सुबह कोई मेरे दरवाज़े पर आकर नहीं कहता कि अपने आठ साल मुझे दे दो। मैं काम पर जाता हूँ, महीने के अंत में तनख्वाह मिलती है, और मुझे तो लगता है कि मुझसे कुछ लिया ही नहीं गया।

Advertisement

एक सौदा करके देखते हैं। मान लीजिए किसी को एक करोड़ रुपये दिए जा रहे हैं। शर्त यह है कि उसे 500 AQI में रहना होगा। उसे साफ़ बता भी दिया गया है कि ऐसे में शायद उसके पास पाँच ही साल हों। वह क्या चुनेगा? बहुत लोग फिर भी कहेंगे, करोड़ दे दो, कम से कम पाँच साल अच्छे से जी लेंगे। देखिए, हमने किसे अच्छा जीना मान लिया है। आदमी को शुरू में ही बता दिया गया कि साँस लेने लायक हवा तक नहीं मिलेगी। लेकिन पैसा है, तो उसे पूरा भरोसा है कि पाँच साल अच्छे कटेंगे। उसे एक करोड़ की कीमत किसने सिखाई? बचपन में किसी रिश्तेदार ने बड़ा मकान खरीदा होगा और घर के किसी बड़े की आवाज़ में उसने उसकी वाहवाही सुनी होगी। वहीं उसकी शिक्षा हो गई। सब कुछ पढ़ना सिखा दिया गया, अपने आप को पढ़ना नहीं सिखाया गया। और एक ऐसी सुबह की कीमत उसे कौन सिखाता जिसमें वह खुलकर साँस ले सके? उसकी परवरिश से समझ में आता है कि वह ऐसा चुनाव क्यों कर रहा है। चुनाव फिर भी उसी का है।

Advertisement

वेदांत कर्म करने वाले को कर्ता कहता है और उसका फल भोगने वाले को भोक्ता। वोट देते वक्त, खरीदारी करते वक्त, शादी में जाने की तैयारी करते वक्त, अपना फ़ैसला करना मुझे बड़ा अच्छा लगता है। नदी के किनारे खड़ा होता हूँ, पानी से बदबू आती है, तो अचानक मुझे बस इतना याद रहता है कि मेरे साथ कुछ बहुत बुरा हुआ है। वोट मैं वैसे ही दूँगा जैसे हमेशा दिया है। खरीदारी वैसे ही करूँगा जैसे हमेशा की है। बस नतीजा बदल जाए। कैसे बदलेगा? और नतीजा भुगतना भी अकेले करने वाले के हिस्से नहीं आता। मछली ने कोई कुर्ता नहीं खरीदा, किसी को वोट नहीं दिया, पर उसे उसी पानी में रहना है। सड़क किनारे गाड़ियों का धुआँ साँस में ले रहे बच्चे ने वह यातायात नहीं चुना था।

Advertisement

कौन साफ होकर लौटा?

पूजा भी इसी पूछताछ के दायरे में आती है। हमारी बहुत-सी पूजा इसी उम्मीद में होती है कि भोगने को और मिले। जिन चीज़ों के लिए हम नदी को पहले ही चुकाते जा रहे हैं, उन्हीं के और मिलने का आशीर्वाद लेने नदी के पास पहुँच जाते हैं। एक आदमी गंगा में जाता है क्योंकि उसे बताया गया है कि डुबकी लगाने से उसके पाप धुल जाएँगे। पूछिए, डुबकी कैसी रही? वह बताएगा कि अब उसे कैसा लग रहा है। क्या उसे यह बताने का खयाल भी आएगा कि वह नदी को किस हालत में छोड़ आया? दूसरा आदमी उसी पानी में कचरा निकालने उतरता है। लौटता है तो कपड़ों पर कीचड़ लगा है। बताइए, दोनों में से पूजा किसने समझी? नदी के आगे सिर झुकाइए, ज़रूर झुकाइए। लेकिन पूजा में भी मैं यही चाहता हूँ कि नदी मेरे लिए कुछ करे, तो मैं उसके लिए कब कुछ करने वाला हूँ?

Advertisement

मैं किसी से संसार छोड़कर संन्यासी हो जाने को नहीं कह रहा। इतना कह रहा हूँ कि चीज़ों से हमारा रिश्ता अँधा क्यों हो? बाहर की गंदगी असली है। और उसे पैदा करने वाले के भीतर की गड़बड़ी भी असली है। नदी साफ़ कर दी और उस गड़बड़ी को देखा ही नहीं, तो काम अधूरा है। कल वही आदमी फिर नाले पर होगा। और अपने भीतर खूब देख लिया, नदी साफ़ करने के लिए कुछ किया ही नहीं, तो यह भी बच निकलने का एक तरीका है।

दुर्गा सप्तशती के दसवें अध्याय में जब शुम्भ मारा जाता है तो आकाश साफ़ हो जाता है, नदियाँ अपनी धारा में लौट आती हैं, हवाएँ शुद्ध बहने लगती हैं और सूरज फिर चमक उठता है। दिल्ली की किसी धुँधली शाम को मुझे ठीक पता होता है कि उन श्लोकों से मुझे क्या चाहिए। नदी अपनी धारा में लौट आए और सूरज सचमुच दिखाई दे। बस जैसे ही सवाल आता है कि शुम्भ कौन है, मैं पड़ोसियों की ओर देखने लगता हूँ।

Advertisement

अगली सर्दी में शायद ओखला पर फिर नावें हों, और थोड़ी देर के लिए उनके पीछे पानी साफ़ दिखाई दे। बाल दिवस वाला बच्चा अगर मेरे साथ किनारे पर खड़ा हो, तो मैं उसे आसानी से समझा दूँगा कि नाव वाले क्या छिड़क रहे हैं, झाग क्यों हट गया और कल फिर क्यों लौट सकता है। लेकिन मान लीजिए बच्चा कहे कि चलिए, नाले के साथ-साथ उलटी दिशा में चलते हैं और देखते हैं कि वह शुरू कहाँ से होता है। जब हम मेरे घर तक पहुँचेंगे, तब भी क्या मैं उसे उतने ही उत्साह से समझाऊँगा?

(आचार्य प्रशांत दार्शनिक और लेखक हैं। उनका कार्य आत्म-अन्वेषण और समकालीन जीवन में उसके अनुप्रयोग पर केंद्रित है।)

कन्वर्सेशन शुरू करें | कमेंट पोस्ट करें

YOU MAY LIKE PROMOTED LINKS BY TABOOLA

The cost of hearing aids in Kulesra might surprise you
See why audiologists are calling it a breakthrough in hearing technology.

Hearing Loss
Learn More

Indians over 70 are switching from hearing aids to this new device.
Recommended by audiologist
Hearing Aids
Learn More

Living in Kulesra? Don't Buy Hearing Aids Before Reading This
Recommended by audiologist
Hearing Aids
Learn More

बेहतर भविष्य की शुरुआत सही सुरक्षा से होती है। आज ही STAR Health के साथ इंश्योर करें।
मेडिकल खर्च लगातार बढ़ रहे हैं। STAR Health Insurance के साथ तैयार रहें।
Star Health

This Fitness Watch Surprises The Whole Country At Rs.1999
Order now before they sell out again
AdamFit
Get Offer

कौन हैं SDM याक्षी अरोड़ा? कर्णप्रयाग के एसडीएम अलकेश नौडियाल से रचाई शादी
Navbharat Times

Your Next Fitness Watch Costs Rs. 1,999
Get AdamFit Watch for Rs. 1,999 with the stated 80% discount. Shop the offer today.
AdamFit
Get Offer

Which Is Better for Gold Trading: CFDs or Futures?
Understand how Gold CFDs compare with Gold Futures. Learn the pros, differences, and which market best fits your trading strategy. Trading in securities involves significant risk.
IC
Learn More

Start Trading Forex in Minutes – Open Your Account
Learn as you go with an intuitive platform, built for new and pro traders. Benefit from lightning-fast execution, low commission and advanced tools. Trading derivatives involves high risk to ...
IC
Learn More

India
की ताजा खबरें, ब्रेकिंग न्यूज, अनकही और सच्ची कहानियां, सिर्फ खबरें नहीं उसका विश्लेषण भी। इन सब की जानकारी, सबसे पहले और सबसे सटीक हिंदी में देश के सबसे लोकप्रिय, सबसे भरोसेमंद
Hindi News
डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म नवभारत टाइम्स पर

Latest News

पिता जेल में बंद, डिप्रेशन से जूझ रहा था बेटा... रोहिणी में 19 साल के लॉ स्टूडेंट ने 13वीं मंजिल से कूदकर दी जान

IND vs NZ 1st Test Live Score: टी ब्रेक के बाद खेल फिर से शुरू, टीम इंडिया को विकेट की तलाश

नदी की सफाई में क्या छूट जाता है?

लखनऊ: डिलिवरी के समय 30% लाइफ या 45 दिन की वैधता जरूरी, FSDA ने जारी किया निर्देश

नेतन्याहू को झटका, बेनेट ने PM पद के लिए आइजेनकोट के नाम का किया समर्थन, लिकुड के साथ जाने से इनकार

Kutch Accident: गुजरात के कच्छ में ट्रक-कार की टक्कर, सेना के जवानों के परिवार के 7 लोगों की मौत, सभी उत्तराखंड के रहने वाले

IPS Story: फेल हुए तो दिल पर लग गई बात, 4 बार निकाला UPSC, राजस्थान का बेटा UP कैडर का अधिकारी

गाड़ी ने ट्रक को डायरेक्ट ठोंक दिया.. कोटा हादसे में सुरक्षित बचे दर्शन ऋषि और मनीषा ने बताया पूरी कहानी

पंडित-पुजारियों को दिखाया अमीर बनने का सपना, पति-पत्नी की जोड़ी ने निवेश के नाम पर ठगे 10 करोड़ रुपए

Nepal PM Balen Shah India Visit Live Updates: नेपाल के PM बालेन शाह आज आएंगे भारत, PM मोदी से होगी अहम मुलाकात; ऊर्जा, व्यापार और कनेक्टिविटी पर फोकस

भारत क्यों चाहता है UNSC में स्थायी सदस्यता? फायदा, कैसे बढ़ेंगी सीटें, जेएनयू प्रोफेसर ने बताई हर एक बात

ऐमजॉन, बिगबास्केट, स्विगी इंस्टामार्ट: क्या चल रहा है इनके डार्क स्टोर में कि सरकार को करनी पड़ रही है कार्रवाई?

UP Chunav 2027: अपने जिलों में रात बिताएंगे यूपी के सभी मंत्री, कार्यकर्ताओं संग बैठक कर फीडबैक जुटाएंगे

सबसे बड़ा स्कोर, वर्ल्ड रिकॉर्ड पार्टनरशिप, 720 रन बनाकर भारत ने कर दिए 5 बड़े कारनामे

Dracula Solar Tech: अब बिना धूप घर के अंदर बनेगी बिजली, जानें क्या है 'ड्रैकुला' सोलर तकनीक और यह कैसे करती है काम?

पति-पत्नी ने फ्लैट के नाम पर कई लोगों को लगाया चूना, बैंकों का भी है बड़ा लोन, गिरफ्तारी के बाद पुलिस की रिमांड पर दोनों

ग्वालियर के बावन पायगा में चार मंजिला मकान के गोदाम में भीषण आग, 15 दमकल गाड़ियों से पाया काबू

क्या चुनाव के पहले चुने जाएंगे सूचना आयुक्त इन 'वेटिंग'? चयन के बाद जिम्मेदारी का करना होगा इंतजार

NBT नवभारत टाइम्स
Powered by TIMES INTERNET

Languages Sites

Kannada News | Marathi News
Malayalam News | Gujarati News
Bangla News | Samayam News
Telugu News | English News
Tamil News | Pregatips News

About

About Us
Colombia Ads and Publishing
Terms and Conditions
Privacy Policy
Work With Us
RSS

Follow Us On

This website follows the DNPA's code of Conduct

Copyright - 2024 Bennett, Coleman & Co. Ltd. All rights reserved. For reprint rights :Times Syndication Service Cookie Settings